

हमें प्रसन्न भी रखते हैं, हमारे रमणीय मुक्तिधाम

ललित भाटी

किसी भी मनुष्य का प्राणांत हो जाने के बाद, हमारे सभी मुक्तिधाम अपनी पावन माटी में, हमारी निर्जीव देह को, अपनी पूर्णता के साथ अपने में आत्मसात करते हैं। अपनी इस उदारता के कारण भी, वे मानव समाज के लिए, अतिरिक्त रूप से बड़े होकर ही प्रस्तुत होते हैं। यदि शाश्वत सत्य की गहराई तक जाकर पड़ताल की जाए, तो वह भी यही कहता है कि, जहां किसी भी व्यक्ति का जन्म होना एक बड़ी जैविक घटना है, तो वहीं उसकी प्राणहीन देह का किसी भी मुक्तिधाम में मिल जाना भी, ठीक उतना ही मूल्यवान प्रसंग। उनकी इसी महिमा के चलते, अब उन्हें ॥ श्मशान ॥ के स्थान पर, ॥ मुक्तिधाम ॥ कहा जाने लगा है।

प्रत्येक मनुष्य को अपनी प्राणवान देह से विश्राम पाने के बाद, अंतिम पड़ाव के रूप में, जाना तो मुक्तिधाम तक है, हमारे सभी मुक्तिधाम, हमें इस सच से भी परिचित कराते हैं। और जब हमारे ये ही मूल्यवान मुक्तिधाम, एक निर्जीव से लेकर , एक सजीव मनुष्य तक के लिए, अपनी बेशकीमती उपस्थिति रेखांकित कराते हैं, तो हममें से ही ज्यादातर जीवित लोगों का यह भी एक पवित्र कर्तव्य हो जाता है कि, हम लोग भी एकाकार होकर, समय –समय पर उनकी सुध लेते रहें। उनके समुचित रख रखाव की। उनके पर्याप्त सौंदर्य की। उनके यथासमय कायाकल्प की। उनकी हरियाली की। उनके मनोहारी रूप की। वहां व्याप्त तमाम सुविधाओं और असुविधाओं की देखरेख की चिंता भी पालते रहें। तब ही हमारे ये मुक्तिधाम, देह की मुक्ति के प्रदाता कहलाने के साथ में, जीवन का परम् सुख बांटने वाले, सात्विक केंद्र बनकर भी प्रस्तुत हो सकेंगे।

अब मुक्तिधामों को लेकर, एक आनंद देने वाली बात क्रमशः यह बनती जा रही है कि, वर्तमान अग्रणी होकर मन प्रसन्न करने वाली घोषणा यह कर रहा है कि, अब देश के अनेक स्थानों के मुक्तिधाम, विभिन्न रूपों में सज संवर कर, अपनी मनमोहन स्थिति को प्राप्त होते जा रहे हैं। उनको निरंतर इतना सुहावना सौंदर्य और मनोरम स्वरूप दिया जा रहा है कि, वे स्थानीय स्तर से लेकर, राष्ट्रीय स्तर तक अपनी उपस्थिति रेखांकित करा रहे हैं। इस सच की पुष्टि में मुरैना, इंदौर, अहमदाबाद, नासिक, बीकानेर के साथ ही, उत्तर प्रदेश के मऊ में मौजूद मुक्तिधाम उल्लेखनीय हैं। ऐसे मुक्तिधामों की श्रेणी को, उनमें व्याप्त निर्मल वातावरण के चलते, अब नवीन नामकरण तीर्थ धाम, मोक्ष धाम, आनंद धाम, निर्वाण धाम भी कहा जाने लगा है।

ठीक इसी क्रम में कहना बनता है कि, यदि हमारे मुक्तिधाम, हमारी निर्जीव देह को अपने में समाहित करते हुए पंचतत्व में विलीन करते हैं, तो उनके प्रति भी, हमारी उतनी ही जिम्मेदारी तो बनती ही है कि, हम सभी जीवित लोग अंतिम स्तर तक जाकर, उनकी शुद्ध तन, मन, धन से परवाह करें। यह तो बेइमानी हो जाएगी कि, केवल वे ही हमारी प्राणहीन देह को स्वीकार करते रहें और हम मनुष्य उनकी ज़रा भी फ़िक्र नहीं करें। वे हम मनुष्यों की निर्जीव देह को ग्रहण करने वाले दिव्य स्थान हैं, इसलिए एक जीवित देह के रूप में, हम लोग उन्हें अपना जो भी दे सकें, अवश्य दें।

वर्तमान में हम सभी को, खुश इस बात पर भी होना चाहिए कि, अब से हमारे मुक्तिधामों की चिंता यदि किसी भी निजी या सामाजिक क्षेत्र के द्वारा नहीं की जाती है, तो सरकारी क्षेत्रों के माध्यम से भी की जाने लगी है। इसके अंतर्गत एक शासकीय प्रभाग के साथ, जहां मुक्तिधाम स्थापित है, वहां के गणमान्य नागरिक, व्यक्ति समूह, सामाजिक संस्थाएं, सक्रिय समितियों की निर्माण रचना करते हुए, उनकी यथायोग्य हिस्सेदारी को सुनिश्चित किया जाने लगा है। इस बेहतर कार्य हेतु सम्मानित अखबारों में विज्ञापन देकर, भागीदारी करने के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित किए जाने लगे हैं। यह मिश्रित जिम्मेदारी अब सर्वश्रेष्ठ परिणाम भी भेंट करने लगी है।

हाल ही में इंदौर के एक जूनी इंदौर मुक्तिधाम को लेकर, आनंद देने वाला समाचार यह बना है कि, वहां मुक्तिधाम सेवा समिति के तत्वावधान में, एक सात दिवसीय भागवत ज्ञान कथा का आयोजन रचा जा चुका है। इस विचार लेख की पूर्णाहुति पर यही कहना है कि, आईए हम सभी मिलकर अपने अपने यहां के मुक्तिधामों को, परम सुख ध्यान में परिवर्तित करने के ईमानदार प्रयास में लगे रहें।